International Journal of Professional Development
Vol.9, No.2, July-Dec.2020 ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online)
Impact Factor 2.923 (IFSIJ)

महात्मा गांधी का शैक्षिक चिंतन तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इसकी औचित्यता

डॉ.आशा वत्स
सहायक प्रोफेसर, विवेकानंद कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गुरुग्राम
अकादमिक काउंसलर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सारांश
स्वतंत्रता पूर्व भारत में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित थी उसका उद्देश्य विद्यार्थियों का हित उनका सर्वांगीण विकास नहीं था। बल्कि उनका एकमात्र उद्देश्य सिर्फ ऑफिस कार्य हेतु लड़कों को बनाना था अर्थात विद्यार्थी को दफ्तर में कार्य करने के लिए मशीनें पुर्जो की तरह से तैयार किया जाता था। गांधीजी ने जब इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली को देखा और उस पर विचार किया तो उन्हें वह शिक्षा व्यवस्था किसी प्रकार से देश की आवश्यकता के अनुरूप नहीं लगी। तब उन्होंने बुनियादी शिक्षा की योजना देश के समक्ष रखी इस शिक्षा के पीछे गांधी जी की शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच थी जो आज भी हमारी शिक्षा व्यवस्था को किसी न किसी रूप में निर्देशित करती है यह लेख गांधी जी के शिक्षा दर्शन की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता से जोड़ता है तथा उसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है।
राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 मैं वर्तमान गुजरात प्रदेश के पोरबंदर नामक स्थान पर एक वैष्णव धर्मावलंबी संपन्न एवं प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। इनका वास्तविक नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। इनके पिता करमचंद गांधी पोरबंदर राज्य के दीवान थे और बड़े धार्मिक एवं सात्विक प्रवती के व्यक्ति थे। इनकी माता श्रीमती पुतलीबाई बड़ी धार्मिक एवं सात्विक प्रवृत्ति की महिला थी। महात्मा गांधी पर परिवारिक पर्यावरण का बड़ा प्रभाव पड़ा।
महात्मा गांधी केवल राजनैतिक नेता ही नहीं थे अपितु एक बहुत बड़े धर्म मर्मज्ञ एवं समाज सुधारक भी थे। इन्होंने अपने समय की पुस्तकी ,सैद्धांतिक, संकुचित और परीक्षा प्रधान शिक्षा में सुधार के लिए भी अनेक सुझाव दिए थे। शिक्षा जगत में यह शिक्षा शास्त्री के रूप में प्रतिष्ठित हैं।
गांधीजी शिक्षा को व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे और मनुष्य की किसी भी प्रकार की भौतिक अथवा आध्यात्मिक उन्नति के लिए इसे उतना ही आवश्यक मानते थे। जितना बच्चे के शारीरिक विकास के लिए मां का दूध । सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य आस्वाद, आस्ते, परी ग्रह, अभय आस्था निवारण, कार्यक्रम, सर्वधर्म समभाव और विनम्रता पालन की ओर प्रवत करने पर बल दिया गांधी जी ने अपने इस शिक्षा दर्शन के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप निश्चित किया और उसे बेसिक शिक्षा का नाम दीया । यहां गांधी जी के शैक्षिक विचारों का क्रम वृद्ध विवेचन प्रस्तुत है।

मुख्य शब्द- बुनियादी शिक्षा, शिक्षा दर्शन, शिक्षा का मूलमंत्र, प्रासंगिकता

प्रस्तावना

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओत प्रोत तथा संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिक एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं पर उनका यह कहना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा एक महत्वपूर्ण योगदान होता है गांधी जी का मूल मंत्र था शोषण विहीन समाज की स्थापना करना सभी को शिक्षित होना चाहिए अन्यथा एक स्वस्थ समाज की स्थापना संभव नहीं हो सकती उनका शिक्षा के प्रति जो योगदान था वह आज अदित्य था। उनका मानना था कि मेरे प्रिय भारत में बच्चों को उच्च शिक्षा अर्थात हेड, हैंड, हार्ट की शिक्षा दी जाए, इस प्रकार की शिक्षा उन्हें स्वाबलंबी बनाएगी।

अध्ययन के उद्देश्य

- गांधीजी के शिक्षा के प्रति विचारों को वर्तमान पृष्ठभूमि या आजकल के समय की कसौटी पर उनकी औचित्यता को समझना।
- नई शिक्षा नीति के साथ गांधीजी के बुनियादी शिक्षा सिद्धांत की तुलना।
- गांधी जी को एक शिक्षा शास्त्री के रूप में जानना, उनके शिक्षा के प्रति विचारों को तर्क की कसौटी पर कसना।

शोध विधि

वर्तमान शोध समस्या के अंतर्गत वर्णित दार्शनिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सिद्धांत एवं दार्शनिक प्रकृति का है इसके अंतर्गत महात्मा गांधी जी के विचार एवं शिक्षा दर्शन दर्शन की वास्तविकता को लिया गया है

गांधीजी के आधारभूत शिक्षा दर्शन के सिद्धांत

- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो ।
- शिक्षा का उद्देश्य बालक के मानवीय गुणों का विकास करना हो ।
- 7 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को निशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाए ।
- केवल मात्र साक्षरता को शिक्षा नहीं कहा जा सकता ।
- शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक के शरीर ,हृदय और आत्मा का सामंजस्य पूर्ण विकास हो ।
- शिक्षा का उद्देश्य नवयुवकों को बेरोजगारी से मुक्त करना होना चाहिए।
- सभी विषयों की शिक्षा स्थानीय उत्पादन उद्योगों के माध्यम से दी जाए ।
- शिल्प की शिक्षा इस प्रकार दी जाए, की बालक उसके सामाजिक और वैज्ञानिक महत्व को समझ सके।

Vol.9, No.2, July-Dec.2020

- शिक्षा के शारीरिक श्रम को महत्व दिया जाए ताकि शिल्प के द्वारा जीवन यापन किया जा सके ।
- बालको एवं बालिकाओं का सामान पाठ्यक्रम रखा जाए।
- पाठ्यक्रम का स्तर वर्तमान मैट्रिक के समकक्ष होना चाहिए।
- पाठ्यक्रम में अंग्रेजी और धर्म की शिक्षा को स्थान नहीं दिया जाना।
- छठी और सातवीं कक्षा में बालिकाओं आधारभूत शिल्प के स्थान पर गृह विज्ञान ले सकती हैं ।
- बालकों द्वारा बनाई गई वस्तुएं को बेचकर विद्यालय अपने ऊपर कुछ व्यव कर सकें ।
- शिक्षा बालकों के जीवन घर ग्राम तथा ग्रामीण उद्योगों को हस्तशिल्प और व्यवसाय से घनिष्ठ रूप से संबंधित हो ।

वर्तमान परिपेक्ष में महात्मा गांधी के शैक्षिक चिंतन का औचित्य

गांधीजी ने बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम के अंतर्गत आधारभूत शिल्प जैसे कृषि, कताई, बुनाई, लकड़ी, चमड़े मिट्टी का काम, पुस्तक कला, मछली पालन, फल व सब्जी बागवानी, बालिकाओं हेतु गृह विज्ञान तथा स्थानीय एवं भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुकूल, शिक्षाप्रद, हस्तशिल्प इसके अलावा मातृभाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं सामान्य विज्ञान, कला, हिंदी, शारीरिक शिक्षा आदि रखा। शिक्षण विधि को शिक्षण का वास्तविक कार्य क्रियाओं और अनुभव पर अनिवार्य रूप से आधारित किया।

उनके अनुसार शिक्षण विधि व्यवहारिक हो बालिकाओं को विभिन्न विषयों की शिक्षा किसी आधारभूत शिल्प के माध्यम से दी जाए करके सीखना ,अनुभव द्वारा सीखना तथा क्रिया के माध्यम से सीखने पर बल दिया जाए। गांधी जी की शिक्षा संबंधित विचारधारा की प्रासंगिकता वर्तमान परिपेक्ष में उपयुक्त व्याख्या का मूल्यांकन किया जाए तो इस तथ्य पर पहुंचते हैं कि गांधी जी की शिक्षा दर्शन वर्तमान परिपेक्ष में भी प्रसांगिक है । सर्वप्रथम गांधी जी द्वारा भारतीय जीवन को दृष्टिगत रखते हुए वातावरण के अनुसार ऐसी शिक्षा योजना प्रस्तुत किया जाए जिसको कार्य रूप में परिणत करने में भारतीय समाज में एक नया जीवन आने की संभावना है । गांधी जी हृदय से आदर्शवादी थे क्योंकि वह जीवन के अंतिम लक्ष्य सत्य को प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करते है, गांधीजी को प्रयोजनवाद भी कह सकते हैं। क्योंकि वह बालक की रूचि के अनुसार क्रिया करके सीखने पर बल देते हैं, उनको प्रगतिवादी इसलिए कह सकते हैं कि वह बालक को उसकी प्रकृति के अनुसार विकसित करना चाहते थे ।

गांधीजी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के सिद्धांत जैसे बालको एवं बालिकाओं को निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा दी जाए। आज हम देखते हैं देश के समस्त वर्गों को शिक्षित करने हेतु कई प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं जैसे निशुल्क अनिवार्य शिक्षा साथ ही साथ बालको एवं बालिकाओं के लिए कई योजनाओं का निर्माण किया गया ह

आज की नई शिक्षा नीति 2020 और बुनियादी शिक्षा के मध्य समानता-

- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए और वह इस तरफ सबसे पहले गांधी जी ने अपनी बुनियादी शिक्षा में इसका जिक्र किया था ।
- शारीरिक श्रम पर गांधी जी विशेष बल दिया था, जिसकी झलक हमें नई शिक्षा नीति 2020 में देखने को मिलते है ।
- शिक्षा का व्यवहारिक एवं व्यवसायिक होना - इस तरफ भी गांधी जी ने विशेष जोर दिया था की शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक के अंदर के कौशल को बाहर निकाला जा सके ठीक उसी प्रकार का प्रयास आज की शिक्षा नीति में दसवीं के बाद 11वीं कक्षा में संकाय को खत्म करने की बात की गई है। अब बालक किसी संकाय में बंध कर नहीं बल्कि अपनी इच्छा के विषयों का चुनाव करने के लिए स्वतंत्र होगा ।
- बालक के अंदर मानवीय गुणों का विकास करना अर्थात एक सफल इंसान होने से ज्यादा जरूरी है कि एक अच्छा इंसान होना, इससे अर्थ है किसी भी व्यवसाय में सफल होने से ज्यादा जरूरी है एक अच्छा मनुष्य होना ।

सुझाव

गांधी जी ने शिक्षा को एक ऐसे माध्यम के रूप में देखा था जो सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त है अन्याय, हिंसा व असमान समानता के प्रति राष्ट्र की आत्मा को जगा सके, गांधी जी ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था जिसमें प्रत्येक बालक अपनी योग्यताओं व संभावनाओं की तलाश कर सके और सभी प्रकार की कुरीतियों, भेदभाव, अन्याय तथा शोषण जैसी बीमारियों से निकलकर दूसरों के साथ मिलकर विश्व स्तर पर कार्य कर सकें ,एक ऐसा विश्व जिसमें आज भी राष्ट्रों के बीच समाज के भीतर तथा मानवता व प्रकृति के बीच संघर्ष बरकरार है, उनके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति समस्त भारतीयों को एकता, मित्रता तथा राष्ट्रप्रेम के सूत्र में बांधती है ।

निष्कर्ष

अतः इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि वर्तमान में जो सबसे बड़ी समस्या डिग्री होते हुए भी रोजगार ना मिलना अर्थात शिक्षित बेरोजगारी है, इस समस्या की तरफ गांधी जी ने बहुत वर्ष पहले ही इशारा करते हुए इसका समाधान शिक्षा और शिक्षा प्रणाली में अपने विचारों के माध्यम से सुझा दिया था ! उन्होंने बुनियादी शिक्षा के अंतर्गत उद्योगों पर आधारित शिक्षा पर बल दिया , हर्ष शिल्प पर बल दिया, करके सीखना पर बल दिया जिससे ज्ञान स्थाई होता है और बालक के अंदर कौशल का विकास होता है । इस प्रकार से शिक्षित बालक व्यवहारिक एवं व्यवसायिक शिक्षा पाकर आत्मनिर्भर बन सकता है। अता एवं यह कहना बिल्कुल भी गलत नहीं होगा कि गांधीजी के द्वारा दिए गए शिक्षा के सिद्धांत, उद्देश, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि विद्यार्थी के लिए उतने ही आज भी आवश्यक है जितने कि उनके काल में महत्वपूर्ण थी । गांधी जी ने धर्म की शिक्षा का बहिष्कार किया क्योंकि इस प्रकार की शिक्षा प्रेम, भाईचारा , सहयोग की भावना

Vol.9, No.2, July-Dec.2020

और मानवता को खत्म करती है । उनकी शिक्षा केवल मानसिक विकास की ओर ही ध्यान नहीं देती बल्कि शारीरिक, मानसिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए भी उपयोगी सिद्ध हुई है ।

संदर्भ

1. गांधी मो. क. 1980 सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा सस्ता साहित्य मंडल नई दिल्ली।
2. गांधी मो. क. 1970 बुनियादी शिक्षा नवजीवन प्रेस अहमदाबाद।
3. बुनियादी शिक्षा डॉ कृष्ण कुमार के कुछ विचार
4. वर्तमान समय में गांधी शिक्षा दर्शन की प्रसंगिकता -सुरेश सिंह

Vol.9, No.2, July-Dec.2020